वेदों में विज्ञान-1

आचार्य डॉ. उमेश यादव

"सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं; उन सब का आदि मूल परमेश्वर है ।" -महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्मित आर्य समाज का पहला नियम "वेदों में विज्ञान" विषय को कितनी स्पष्टता के साथ बता रहा है । हमारी मान्यता है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है जो सृष्टि के प्रारम्भ में चार पवित्र आत्मा अग्नि, वायु, आदित्य और अँगिरा ऋषियों को ईश्वर-कृपा से मिला । यहाँ मूलत: दो प्रकार की विद्या/ज्ञान की बात की गयी है । १. सत्य विद्या और २. पदार्थ विद्या । सत्य विद्या आध्यात्मिक ज्ञान और पदार्थ विद्या भौतिक ज्ञान अर्थात् विज्ञान । संसार में जितना भी विज्ञान है जिसके आधार पर नयी-नयी खोज/रिसर्च हो रही हैं; इन सबका मूल परमेश्वर है जिसका मूल बीजरुप ज्ञान वेदों में पूर्ण रुप से उपलब्ध है । इनको सही व्याख्या से समझने की जरूरत है ।

यहाँ आचार्य यास्क का यह कथन अत्यन्त सटीक है - न ह्येषु प्रत्यक्षमस्ति अनृषेरतपसो वा- निरुक्त-१३.१२ अर्थात् जो ऋषि व तपस्वी नहीं है, उसको मंत्रों के अर्थ का यथार्थ ज्ञान नहीं हो सकता है । इसी कारण ऋषि को मंत्रद्रष्टा कहा गया है -ऋषियो मंत्रद्रष्टार: । मंत्र के मूल रहस्यों को जानने के लिये वैज्ञानिक सोच व कठोर परिश्रम की आवश्यकता है । ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका महर्षि दयानन्द ने विमान बनाने की कला की बात वेदों के आधार पर कही ।

वेदों में वर्णित अग्नि, मित्र, वरुण, मरुत्, सोम, वायु, विद्युत्, जल, पृथिवि, आकाश आदि शब्दों का गूढ़ रहस्यात्मक वैज्ञानिक अर्थ का चिन्तन
करने की परख ऋषि तुल्य सोच रखने वाले आचार्य विद्वानों का ही काम

है । महर्षि दयानन्द के स्वयं यत्र-तत्र वेद भाष्य करते हुये मंत्रों का वैज्ञानिक व्याख्यायें की हैं । अपने सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों में भी विज्ञान व वैज्ञानिक सोच को खूब उभारा है । सृष्टि विज्ञान आदि पर तो विस्तृत व्याख्यायें की हैं । इसी परम्परा में आर्य समाज के कई योग्य विद्वानों ने वेदों में विज्ञान विषय पर प्रसंशनीय प्रयास किया है जिसका परिणामस्वरुप आज हमारे पास स्वाध्याय व चिन्तन के लिये काफी सहायक सामग्री पुस्तक रुप में उपलब्ध है । इन सबके स्वाध्याय व चिन्तन के आधार पर मैं भी सरल व सुबोधरुप पढ़ने योग्य व ज्ञानवर्धक सामग्री पाठकवृन्द के लिये उपस्थित करने का प्रयत्न करने लगा हूँ ।

वेदों में भौतिक विज्ञान, रासायनिक विज्ञान, जीवविज्ञान, गणित शास्त्र आदि अनेक विज्ञान के पहलु पाये जाते हैं । इनके मूल अर्थों को गहराई से समझकर इनसे ही अन्वेषण कार्य को बढ़ाया जा सकता है जिसमें आधुनिक खोज का समन्वय भी अत्यन्त सहायक होगा । ऊर्जा, गैस, विद्युत्, ताप, सूर्य, चन्द्र, पिथिवि आदि का आकर्षण, गुरुत्त्वाकर्षण आदि तमाम विषय वेदों में बीजरुप से प्राप्त हैं ।

आम जनता को यही समझ व संस्कार है कि वेद तो केवल पूजा-पाठ या यज्ञों के सम्पादनार्थ

पंडित लोगों द्वारा उच्चारण किया जाता है । कई लोग इसे अपनी अज्ञानता व दुर्भाग्यवश भूत-प्रेत, जादु-टोना आदि अन्धविश्वासों का जड़ ही मानते हैं । कारण जनता का दोष नहीं है अपितु यथार्थ स्वाध्याय की कमी है । वेदों में तो समग्र मानव जाति के सफल जीवन जीने का पवित्र वैज्ञानिक ज्ञान मोतियों की तरह पिरोया हुआ है । कोई महर्षि दयानन्द की सोच को समझे तो सही । आगे से आगे इसका विस्तार किया जायेगा । आशा है मेरा यह प्रयास पाथकवृन्द को पसन्द आयेगा । निसंदेह सबके लिये यह ज्ञानवर्धक व रुचिकर विधा होगी ।